

समग्र विकास अभ्यासक्रम (५ से १४ वर्ष)

लालयेत् पंच वर्षाणि दश वर्षाणि ताडयेत् ।
प्राप्ते षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रं समाचरेत् ॥

श्रवण, पठन, गायन और कंठस्थीकरण ।
उर्ध्वगामी हो रही, ऊर्जा की हर किरण ॥

अभिभावक
प्रशिक्षण एवं
सहभागिता ।

क्रियाशक्ति

इच्छाशक्ति

ज्ञानशक्ति
पंचकोष,
पंचतत्त्व,
पंचपदी और
पंचयज्ञ
आधारित
शिक्षा ।

ज्ञाननिष्ठ,
राष्ट्रनिष्ठ
और
आचार्यनिष्ठ
विद्यार्थी
निर्माण।

स्वायत्त शिक्षा व्यवस्था के विषय में
आचार्य विनोबा भावे का एक सुन्दर कथन है—

“छात्र शिक्षक परायण, शिक्षक छात्र परायण,
दोनों ज्ञान परायण और ज्ञान सेवा परायण होना चाहिये।”

ज्ञानार्जन के करणों (दस
इंद्रियों, मन, बुद्धि, अहंकार,
चित्त एवं आत्मा) पर आधारित
शिक्षा ।

घर में विद्यालय की तरह और विद्यालय
में घर की तरह शिक्षा ।

आजीवन एवं
सार्वभौमिक
शिक्षा ।

तेजस्वी,
कुशाग्र और
विशाल
बुद्धि ।

व्यष्टि, समष्टि,
सृष्टि एवं
परमेष्टि में
एकात्म,
आत्मीय,
चक्रीय, परस्पर
पूरक एवं
परस्परावलंबन
पर आधारित
संबंधों की
शिक्षा ।

प्रेम, कृतज्ञता,
दोहन और
रक्षण ।

अभ्युदय एवं निःश्रेयस
की प्राप्ति (रोजगार एवं
संस्कार)।

• (Activity Based Learning)

करने से होता है ।
करने से ही होता है ।
करने से होता ही है ।

इदं त्रैलोक्यविख्यातं विश्वकल्याणकारकम् ।
शिक्षायाः ज्ञानयज्ञार्थं नैमिषारण्यमुत्तमम् ॥

भारतीय ज्ञान पाठावली

क्रम	श्रेणी	ग्रंथ संख्या	किनके लिए
१.	अंकुर	११	५ और ६ वर्ष के छात्र
२.	पल्लव	१३	७ और ८ वर्ष के छात्र
३.	तीर्थ	१५	९ और १० वर्ष के छात्र
४.	प्रसाद	१७	११ और १२ वर्ष के छात्र
५.	धृति	१९	१३, १४, १५ वर्ष के छात्र
६.	धारणा	२१	१६ और १७ वर्ष के छात्र
७.	मेधा	२३	१८, १९, २० वर्ष के छात्र
८.	प्रज्ञा	२५	प्रवृद्धजन, विद्वज्जन
९.	चिन्ति	२७	शैक्षिक शोधकर्ता
१०.	परिधि	२९	सर्व जिज्ञासुजन

